स्नातकोत्तर मैथिली विभाग
पटना विश्वविद्यालय
प्रो० रमानारायण मेहता

काव्यक गुण

कवि काव्यजगतक प्रजापति होइत छथि। ब्रह्माक सदृश कविक सृष्टि काव्य सेहो गुण-दोषमय होइत अछि। काव्य जगत मे गुणक अपेक्षा दोष प्रसंगकें प्राथमिकता देल गेल अछि अर्थात् दोष विवेचनक पश्चात् गुणक विवेचन भेल अछि। गुण विवेचन कें प्राय: दोष विवेचनक निषेधे मानि लेल गेल अछि।

गुणक लक्षणक निरूपणक सम्बन्ध मे काव्याचार्य लोकनि मे एक मत नहि देखना जाइत अछि। गुणक निरूपणक प्रारम्भ सर्वप्रथम आचार्य भरतसँ होइत अछि —

गुणविपर्ययाद एषाम माधुर्योदार्यलक्षणा:।
एत एव विपर्यस्ता गुणा: काव्येषु कीर्त्तिता: ॥

आचार्य भरत गुणकें दोषक विपर्यय कहलनि। एहि विपर्ययक अर्थ अभाव कहलनि। यद्यपि एहि शब्दक अर्थ ग्रहणमे मत भिन्नता अछि, केओ एकरा अभाव कहैत छथि, केओ एकरा अन्यथाभाव तँ केओ वैपरीत्य भाव। भरतक अनुसार गुण काव्यक शोभाधायक तत्व अछि। संगहि अलंकार तथा गुणकें रसक सहचर रूप कहि दुनूक समान रूपक महत्ता देलनि।

वामन — काव्य गुणक स्वरूपक वर्णन सर्वप्रथम आचार्य वामन सएह प्रस्तुत कएलनि —

काव्यशोभाया: कर्त्तारो धर्मा: गुणा:
तदतिशय हेतवस्त्वलंकारा:

हिनका अनुसारें काव्यक शोभाकारक धर्मकें गुण कहब। गुण बिना थिक तथा अलंकार वनिता, गुणक अभावमे सौन्दर्याधान करब कदापि संभव नहि। अत: गुण काव्यक शरीर रूप शब्द एवं अर्थक धर्म थिक तथा शोभादायक उपादान सेहो अछि। एहि तरहें आचार्य वामन भरतक अनुसार गुणकें रसक धर्म स्वीकार नहि कए शब्दार्थक धर्म मानि ओकर स्वतंत्र एवं महनीय सत्ता कें स्वीकार कएलनि। ओ गुणकें रसक आधार नहि मानि रसकें गुणक अंग रूपमे घोषित कएने छथि।

आनन्दवर्द्धन — ध्वनिवादी आचार्य आनन्दवर्द्धन गुणकें रसक धर्म अथवा काव्यक मुख्यत: रसक आधार कहलनि —

तमर्थमवलम्बन्ते येऽङ्गिनं ते गुणाः स्मृताः ।

वामन सदृश ई शरीर का शौर्यादि, धर्म नहि अछि आत्मभूत रसक अंग मानैत छथि जाहिना मनुष्यक शरीरमे शौर्यादि गुणक स्थिति रहैत अछि ताहिना काव्यमे रसकेँ उत्कर्ष प्रदान करएबला गुण कहल जाइत अछि ।

अग्निपुराण —

अग्निपुराण तँ गुणक अभावमे अलंकार युक्त काव्योकेँ आनन्दप्रद नहि मानलनि अछि । हिनक कहब अछि जे रमणीक शरीर पर शौर्यादि गुणक अभावमे हार जेना भारस्वरूप प्रतीत होइछ ताहिना अलंकारसँ युक्त रहितो काव्य बिनु गुणक आनन्ददायक नहि भए सकैत अछि —

अलंकृतमपि प्रीत्यै न काव्यं निर्गुणं भवेत् ।
वपुष्यललिते स्त्रीणां हारो भारायते परम् ॥

आचार्य भोज —

आचार्य भोज सेहो गुणकेँ उत्कृष्ट मानैत गुणक बिना अलंकार युक्त काव्यकेँ आनन्द रहित कहलनि —

अलंकृतमपि श्रव्यं न काव्यं गुणवर्जितम् ।
गुणयोगस्तयोर्मुख्यो गुणालंकारयोगयोः ॥

आचार्य मम्मट —

आचार्य मम्मट यद्यपि मुख्य रूपसँ गुणकेँ रसक धर्म कहैत छथि, मुदा गौण रूपसँ शब्दार्थक धर्मक रूपमे सेहो गुणकेँ स्वीकार करैत छथि । हिनक कहब अछि जे आत्माक शौर्यादिक गुणक सदृश रसमे उत्कर्ष आनएबला एवं अपरिहार्य धर्म गुण थिक जकर काव्यमे अचल स्थिति रहैत अछि —

ये रसस्याङ्गिनो धर्माः शौर्यादय इवात्मनः ।
उत्कर्षहेतवस्ते स्युरचलस्थितयो गुणाः ।

एहि प्रकारेँ गुणक स्वरूपक विवेचनक पश्चात् ई निष्कर्ष बहराइछ जे गुण रसक धर्म थिक । काव्यमे एकर स्थिति नित्य एवं अचल अछि तथा काव्यक शोभावृद्धिमे प्रधान रूपसँ सहायक होइत अछि ।

गुणक भेद – गुणक भेद निरूपणक आधार व्यापक अछि। संस्कृत आचार्य लोकनिमे एहि प्रसंग पाँच वर्ग अछि –

पहिल वर्ग – आचार्य भरत गुणकेँ शब्दार्थ धर्म मानि दस गोट गुणक उल्लेख कएलनि। ई दसो गुण क्रमशः श्लेष, प्रसाद, समता, समाधि, माधुर्य, ओज, सुकुमारता, अर्थव्यक्ति, उदारता, कान्ति थिक। समर्थक लोकनिमे आचार्य दण्डी एवं वाग्भट आदि छथि। आचार्य वामन भरत द्वारा निर्दिष्ट एकाहि नामक दस शब्द गुण एवं दस अर्थ गुण कहलनि अछि।

दोसर वर्ग – एहि वर्गक आचार्य आनन्दवर्द्धन छथि हिनक समर्थक आचार्य लोकनिमे मम्मट, हेमचन्द्र, विश्वनाथ, जगन्नाथ आदि छथि। ई पूर्वोक्त दसो गुणक अन्तर्गत माधुर्य, ओज, प्रसाद एहि तीनों गुणमे कए देलनि।

तेसर वर्ग थिक आचार्य कुंतकक – ई गुणक दु गोट रूप सामान्य एवं विशिष्ट कहैत सामान्यक अन्तर्गत औचित्य एवं सौभाग्य तथा विशिष्ट गुणक अन्तर्गत माधुर्य, लावण्य आदि गुण केँ कहलनि। किन्तु हिनक गुणक निरूपण काव्यमे मार्ग रूपमे अछि तथा एहि रीतिमे ओ तीन गोट रीतिक निर्देश कएलनि जकर अन्तर्गत ई सभ गुण देखल जाइछ – सुकुमार, वैचित्र्य एवं मध्यम। किन्तु आचार्य कुंतक, रीति परक काव्य गुण कविक स्वभाव पर आधारित छनि, किन्तु देश, स्थान, काल तथा विषयसँ एकर सम्बन्ध नहि रहलाक कारणेँ हिनक गुण भेद निरूपण प्रतिष्ठित नहि भए सकत।

चारिम वर्ग आचार्य भोजराज – आचार्य भोजराजक अनुसार गुणक २४ गोट भेद कहल गेल अछि जाहिमे दस गोट भेद तँ पूर्वहि आचार्य भरत द्वारा निर्दिष्ट अछि एवं एकर अतिरिक्त उदात्तता, ऊर्जितता, प्रेमान, सुशब्दता, सूक्ष्मता, गम्भीरता, विस्तार, संक्षेप, संमितत्व, भाविक, गति, रीति, उक्ति, प्रौढि।

पाँचम एवं अंतिम वर्ग थिक आचार्य हेमचन्द्रक – आचार्य हेमचन्द्र काव्यमे पाँच गोट गुणक निर्देश कएने छथि, जाहिमे ओज, प्रसाद, मधुरिमा, साम्य एवं औदार्य थिक।

उपर्युक्त विविध वर्गक अतिरिक्त अग्निपुराणमे सेहो काव्य गुणक प्रसंग विचार कएल गेल अछि।

अग्निपुराणमे काव्य गुणकें भावात्मक कहल गेल अछि ओ शोषक अर्थात माप्त नहि ओकर भावात्मक सत्ता छिक। एहि काव्य गुणकें तीन वर्गमे (शब्दगत, अर्थगत एवं शब्दार्थो उभयगत) तकर अन्तर्गत मध्य नौहि उन्नीस गोट प्रभेदक उल्लेख कएलनि जाहिमे 07 शब्दगत, 06 अर्थगत एवं 06 शब्दार्थो उभयगत। एहि तरहें अग्निपुराणक गुण आरव्याक विवेचन सँ स्पष्ट अछि जे भरत, दंडी एवं वामन द्वारा निर्देशित दस गुणमे अधिकांश गुण नाम स्वीकार कयितु अग्निपुराणकार ओकर सभ लक्षणकें स्वीकार नहि कएलनि अछि गुणतें स्हलो अछि जकरा अग्निपुराणकार निर्देशित कएने छथि तथा ओ सर्वथा स्वतंत्र भावसँ कल्पित अछि। एहि तरहें गुणक वर्गीकरणक संदर्भ मे आचार्य वामन शब्दार्थक चार्म कहि ओकरा रीति चमत्कार कहलनि किन्तु आनन्दवर्द्धन ओकर सम्बन्ध रससँ स्थापित कए चितवृत्तिक रूपमे मानलनि। रसानुभूतिक प्रक्रिया हृदयकजे तीन स्थिति द्रुति, दीप्ति एवं व्याप्ति देखा ओल गेल अछि वस्तुत: इएह आधार थिक काव्यगत त्रिविध गुण माधुर्य, ओज एवं प्रसादक कल्पना आ एहि तीनू गुणकें वर्तमान आचार्य लोकनि सेहो स्वीकार कएने छथि। माधुर्यक अभिप्राय होइछ रसमयता। आचार्य दंडी एहि माधुर्यक विश्लेषणमे स्पष्ट शब्दें अपन ग्रंथ काव्यादर्शमे उल्लेख कएलनि —

मधुरं रसवद् वाचि वस्तुन्यपि रस स्थिति।
जैन मित दन्यो मधुदन्यो मधुव्रता।

ओज थिक चितवृत्ति रूप दीप्तिक द्योतक चित्तक विस्तारक जे मन मे तेज उत्पन्न करए। वीर, अद्भुत आदि रस स्थितिमे एकर सहज बोध भए जाइछ। प्रसाद गुण ओ गुण थिक जे सहजहिं हृदयमे व्याप्त भए जाए। साहित्य दर्पणकार आचार्य विश्वनाथ एहि गुणक विश्लेषणक क्रममे कहैत छथि —

"चित्तम व्याप्नोति य: क्षिप्रम शुष्केन्धन मिवाडनल।
स: प्रसाद: समस्तेषु रसेसु रचनासु च।"

अर्थात जे सुखाएल काठमे आगिक सदृश शीघ्रतासँ चित्तमे व्याप्ति भए जाए। तथा इएह सभ रस एवं सभ प्रकारक पद रचना काव्य गुण थिक।